समकालीन हिंदी कविता का देशांतर

डॉ. चंद्रकांत सिंह

विषय-सूची

भूमिका 7

समकालीन हिंदी कविता की अवधारणा और परिप्रेक्ष्य

1. युगीन प्रश्न और समकालीन हिंदी कविता 15
2. समकालीन प्रश्न और हिमाचल की समकालीन हिंदी कविता 23

सृजनात्मकता एवं रचनात्मक-बोध

3. अरुण कमल : गहन रचनात्मक-बोध के कवि 41
4. राजेश जोशी : साधारण कथ्य के असाधारण कवि 51

आर्तवेदना का काव्य

5. गोबिंद प्रसाद : वेदना की उठती लहर के कवि 63

सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ

6. मुकेश मानस : सामाजिक-राजनीतिक प्रतिबद्धता के कवि 79
7. समकालीन यथार्थ और हरीश चंद्र पाण्डे का काव्य 94

1. युगीन प्रश्न और समकालीन हिंदी कविता

समकालीनता का शाब्दिक अर्थ समकाल से जुड़ा होना है। ऐसी कविता जो अपने समकाल को दिखाती है उसे समकालीन कविता के रूप में देखा गया। सातवें दशक के बाद हिंदी कविता में समकालीन प्रवृत्तियों को लेकर खूब चर्चा होने लगी। छोटे-मोटे आंदोलनों के बाद ऐसा महसूस किया जा रहा था कि कविता की पुनः वापसी हो रही है। इस कविता ने जीवन के विराट अनुभव को केंद्र में रखकर बात की। ऐसा नहीं है कि समकालीन कविता के पूर्व कविता अपने समय से जुड़ी न थी, कविता ऐतिहासिक रूप से अपने समय की प्रतिछवि थी किंतु समकालीन हिंदी कविता इस मायने में अलग है कि इस कविता ने शोषण के सभी शिविरों को विभाजित किया। यह ऐसी कविता-प्रवृत्ति है जिसने कला के सीमित अर्थ में कविता को न देखकर बड़े फलक में उसे पुनर्व्याख्यायित किया। इस कविता में मनुष्य की विभीषिका है, उसके संघर्ष हैं जो प्रकट होते हैं। इस कविता की सबसे बड़ी विशेषता अपने युग की जटिल अभिव्यक्ति है। कवियों ने इस दौर की कविता को कई ढंग से व्याख्यायित किया किंतु इस कविता को यदि विस्तार से देखें तो इसमें आम आदमी के प्रति गहन जुड़ाव है। समकालीनता पर बात करते हुए नन्दकिशोर आचार्य ठीक कहते हैं कि–"एक इन्सान के रूप में मेरे लिए समकालीनता का अर्थ है अपने समय में एक मनुष्य की हैसियत से जिंदा रहने की आकांक्षा और उसके लिए किया गया संघर्ष। हम तभी समकालीन हैं जब हम अपने समय में मनुष्य बने रहने का संघर्ष करते हैं और मनुष्य बने रहने का अर्थ है अपनी स्वाधीनता को, अपनी सर्जनात्मकता को, अपने मूल्यबोध को, अपने मानवत्व को जिलाए रखना। जाहिर है कि यह संघर्ष कोई अपने समय से कतरा कर नहीं कर सकता। समय